Eternity Literature & Social Science Review Journal (ELSSRJ)
Vollume : 2 ,Issue No : 2 e- ISSN:2456-3528

Title of Article

..' उपनिषदो में आत्माका स्वरूप'..

Author/Researchers

प्रा।जयाबेन सी।परमार (व्याख्याता)
संस्कृत विभाग
रोफेल आर्ट्स एण्ड कोमर्स कॉलेज,
वापी-३९६१९१ (गुजरात)

Issue Month& Year

April 2017

Editor-In-Chief

Dr. Dinesh K. Bhoya

..'उपनिषदो में आत्माका स्वरूप'..

ऊपनिषद साहित्य से वैदिक साहित्य में एक नये युगका आरम्भ होता है. संसार के साहित्यमें भारत के वैदिक-वाङमय का स्थान,प्राचीनतम होने से तथा सर्वप्रथम ज्ञान-रश्मि को वीकर्ण करने वाला होने से प्रथम कोटि में आता है. इसके अतिरिक्त ईश्वर के विषय में अथवा सृष्टि के उत्पादक तत्त्व के विषय में कहीं भी किसी भी साहित्य में इस प्रकार की और इतनी गहरी छान-बीन नहीं हुई जितनी जिस तरह और जैसी भारतके वैदिक वाङमय मैं वैज्ञानिक दृष्टि से की गई है. इसीलिये यह मान्यता है कि विश्व को ' इश्वर –तत्त्व ' के विषय में एव कला – क्षेत्र में सर्व प्रथम दिशा बोध भारत में उपनिषद ने हि दिया, यही कारण था कि भारत को ' विश्वगुरु' कहा जाता था.

वैदिक ऋचाओं के प्रस्फटन के सहस्त्रों ही क्या अनन्त वर्षो के अनन्तर ईश्वर तत्त्व तथा ईश्वर – कृत सृष्टि विज्ञान की तात्त्विक व्यवस्था के बोध के लिये आर्यवर्त के आत्मादष्टा ऋषियों ने ही परमपुरूष से उदभूत इस वेद-वाङमय का पुनरावलोकन कर इसे संग्रहीत किया था. इस प्रकार भारतीय तत्त्वज्ञान तथा धर्मसिद्वांत को मूलस्त्रोत उपलब्ध है. वस्तुतः उपनिषद् वह आध्यात्मिक मानसरोवर है जहाँ से ज्ञान की अनेकानेक प्रकारकी नदियाँ निकलकर इस पुण्य भूमि में मानव मात्र के ऐहिक कल्याण एवं आमुष्मिक मंगल के लिए निरन्तर प्रवाहित होती है. उपनिषद श्रवण प्रधान गंथ है. एसे आत्म विद्या, मोक्षविद्या, तथा ब्रह्मविद्या भी कहते है.

उपनिषदो का लक्ष्य है मनुष्य मै विद्यामान अंतर्निहित दिव्यता की अभिव्यकित. आत्मा और ब्रह्म तत्व को उपनिषदो में कई बार दोहराया गया है. परम सत्य की उपलब्धि हेतु ब्रह्मर्षियों ने अपनी दृष्टि को भीतर की तरह मोड लिया. उन्हें बाहरी प्रयोगशाला की वस्तु थी. उन्होंने परम सत्य के विभिन्न स्तरों का अविष्कार किया और सुक्ष्मसे सूक्ष्मतर स्तरो तक पहुँचते गए और अंततः आत्मतत्त्व की अनुभूति की जो कि सत् चित् आनन्द स्वरूप है. प्रत्येक जीव सर्वव्यापी आत्मा का ही एक प्रतिबिम्ब है. जिस तरह लहरे समुद्व से जुडी हुई है उसी प्रकार जव भी ब्रह्मासे जुडा हुआ है. ब्रह्मा जड-चेतन सब जगह व्याप्त है. इस प्रकार वे विश्वव्यापी सार्वभौमिक एकता के आदर्श तक पहुँचे. इन सत्यों को उपनिषदो में विभिन्न कहानियों और गुरू शिष्य वार्तालापो द्वारा समझाया गया है.

❖ 'उपनिषद शब्द की व्युत्पत्तिः-

प्राचीन आचार्यो ने ' उपनिषद ' शब्द की निष्पति' षदलु ' धातु से मानी और की है. यह धातु गति, अवसादन, विषरण के ग्रंथ में प्रयुक्त होती है. इस आधार पर निकटता के अर्थ में ' उप ' तथा निश्यात्मकता का द्योतक उपसर्ग ' नि' के साथ गति और विषरण तथा अवसादन अर्थवाली ' षदलु ' धातु में ' क्विप् ' प्रत्यय का योग करने पर उपनिषद शब्द को निष्पन्न माना है. जिस विद्या से सांसारिक अविद्या का नाश होता है. और जो मुमुक्षुओ को ब्रह्म प्राप्ति करा देती है वह अध्यात्म विद्या ' उपनिषद ' है. सामान्य तथा उपनिषद का अर्थ है गुरु के निकट बैठकर ब्रह्मविद्या अध्ययन करने की ओर इंगित करता है. क्योंकि ' ब्रह्मविद्या ' अथवा ' आत्मविद्या ' के ज्ञान के लिए किसी न किसी साधिकर और इस विद्या के मर्मज्ञ के ही पास जाना अनिवार्य होता है. जिससे जिस विद्या का ज्ञान प्राप्त किया जाय वही उस विद्या का गुरू होता है. इस प्रकार प्राचीनों द्वारा कृत ' उपनिषद ' शब्द की निष्पत्ति में उपर्युक्त जो तीन अर्थ बताये गये है उन तीनों का सम्यक् उदबोध हो जाता है. जेसे की – उपनिषादयति सवनिर्थकरसंसार विनाशयति संसार करणे भूतात्मविद्यां न शिथिलयति चब्रह्म च गमयति इति उपनिषद **१** (गैरोला – पृ-१३९ से उदधृत)

शङ्कराचार्य के मतानुसार आत्मविस्मृति पूर्वक श्रद्वा और भक्ति के साथ जो लोग ' ब्रह्मविद्या ' को प्राप्त करते है. उनका गर्भवास, जन्म – मरण, बुढापा तथा रोग आदि अनर्थो का जो विनाश करती है तथा ज्ञेय ब्रह्म को प्राप्त करती है उनकी अविद्या आदि को जो संसार के कारण है. जड से नाश करती है वह उप + नि + पूर्वक सद्धातु से निर्मित ' उपनिषद ' है.२ य इमा ब्रह्म विद्यामुपनयन्त्यात्मभावेन श्रद्वा भक्तिपुरःसर संतस्तेषा गर्भजन्यजरारोगाद्य वर्गो विनिश्यति परं वा ब्रह्म गमयति अविद्या संसारकारणं चात्मन्तमवसा–दयति विनांशयति, इत्युपनिषद, उपनिपूर्वस्य सादेरे वमर्थसस्मरणात् – शंकर.

❖ आत्मा का स्वरूप

आत्मा उपनिषदो के विचारण केन्द्र है. व्यक्तिमात्र में अधिकार के स्वरूप में जो उपस्थित है. ऐसा आत्मतत्त्व जो व्यक्तिमात्र का मूल स्वरूप है. उसकी प्राप्ति आत्मा–साक्षात्कार वो जीवन का लक्ष्य है.परमात्मा से अलग हुआ उस का ही स्वरूप आत्मा, अंत में उस परमात्मा में लीन हो जाता है. ब्रह्मतत्त्व निरूपण का उपदेश प्रत्येक आत्मा उस को प्राप्त करे सायद ही अैसा कोई उपनिषद होगा जीस में आत्मतत्त्व का विचार नहीं हुआ.

उपनिषद ने व्यक्ति के शरीर को देखकर या कहिये शास्त्रोक्त ब्रह्माण्ड की रचना जानकर शरीर को भी परोक्ष ब्रह्माण्ड की भांति पांच कोश में बाटीं है. बह्मांड के पंच ३ पुंडरी है. ये एक दुसरे से अभि सूत्रित है. इस समुचे ब्रह्माण्ड को इसी लिये शास्त्र में कहा है – पंचपुंडीशमयं जगत्. और इसी से उत्प्रेरणा लेकर आत्मद्वष्टां ऋषियों ने इस शरीर में भी एक से एक सम्बंधित पंचकोश को मान्यता दी है. वेदान्त की दृष्टि में इन ह्रह्माण्डीय पंचपुंडरीक–भूः,भुवः,स्वः,महः और जनः की भांति इस शरीर में भी (१) अन्मय कोश (२) प्राणमय कोश (३) मनोमय कोश (४) विज्ञानमय कोश और (५) आनन्दमय कोश माने है. तैत्तिरोनिषद की आनंदवल्ली अनुवाक में पंचकोश विवरण से स्पष्ट है कि पृथ्वी,आप,तेज,वायु,आकाश ये ही पांच तत्त्व नहीं इनके अतिरिक्त 'प्राण' भी एक तत्त्व है. इसी प्राण से प्राणमयकोश सृजित होता हे.उपर्युक्त पांचो कोश विवरण से स्पष्ट है कि पृथ्वी आप,तेज,वायु,आकाश ये ही पांच तत्त्व नहीं इनके अतिरिक्त प्राण भी एक तत्त्व है. इसी प्राण से प्राणमय कोश सृजित होता है. उपर्युक्त पांचो कोशो में एक–एक शरीर और एक–एक आत्मा है.

उपनिदों ने घोषणा की हे–' नयमात्मा प्रवचनेन लम्यो न मेघया न बहुना श्रुतेन ' – आत्मा ज्यादा बाते गढने नहीं प्राप्त होती, न वह बडी बुद्विमत्तासे ही सुलभ है. और न वह वेंदो के ढने से ही मिल सकती है. वेद स्वंय यह बात करते हे कि शास्त्र–पाठ द्वारा भी आत्मा की प्राप्ति नही हो सकती. थह गुरू से शिष्य को ,मिलता है. ॐ नमो भगवते वैवस्वताय मृत्यते ब्रह्मविद्याचार्याय नचिकेतसे च.

कढोपनिषद में अन्तरात्मा का दर्शन करने का अनुष्ठान दिया हे कि आत्मा ज्ञानेन्द्रिय का विषय नहीं है. मनुष्य ज्ञानेन्द्रिय की मदद से ही विषय को जान सकता है. उससे वो बाह्य जगत का दर्शन कर सकते है. किन्तु अन्तरात्मा का नहीं कर सकता इस लिए कहा है कि –

पराञ्चय रवानि तयतृणम् स्वयंभूः.

तस्माद पराङपश्यति नान्तरात्मा..

इस लिए आत्मा का स्वरूप स्पष्ट नहिं है.उसका वर्णन भी किया जा सकता है. कठोपनिषदो में नचिकेता यम के पास से आत्माज्ञान की ही अभिलाषा करते है तब नचिकेता को यमराज ने कहा आत्मतत्त्व का रहस्य इतना सुक्ष्म है कि बहुत से लोग तो एसे है जो उसे सुनना ही नहीं चाहते. एसलिए इसको समझने वाला आचार्य तथा अच्छी तरह जानने वाला शिष्य ये दोंनो संसार में अद्भुत है. ऐसा शिद्वय नचिकेता है.४ और गीता में अर्जुन है. यम नचिकेता को कहता है कि आत्मतत्त्व

विषयक प्रश्न सामान्य नहीं है इस लिए आत्मज्ञान देने से पहेले परमात्मा की महत्ता का वर्णन करते कहते है कि आत्म सदैव साथ में रहते हुए भी उसको देखा जा सकता नहीं है.

गीता में भी भगवानने कहा है कि अव्यक्त रूप से मुझसे ही यह जगत व्यक्त है. सर्व प्राणिओं कल्यित रूप से मुझ में ही रहा है. किन्तु में उसमें नहीं है.५ आत्मतत्त्व साक्षात्कार के लिए श्रवण,मनन तथा निदिध्यासन सोपान की तरह एक दुसरे से संबद्ध है.उससे ही आत्मस्वरूप की प्राप्ति होती है.

कठोपनिषद में आत्म-स्वरूप को यमराज ओमकारके प्रतीकरूप दर्शाते है. आत्मज्ञान पानेके लिए ओमकार ही सर्व श्रेष्ठ है. कठोपनिषद के अलावा आत्म के बारे में विभिन्न ग्रंथो में भी मत दिये गए है जैसै कि-

१. यह शरीर ही आत्मा है. ऐसा चार्वाक आदिका मत है. ६
२. शरीर आत्मा नहि अपितु इंद्रियाँ आत्मा है.७
३. अन्य विचारक मन को मैं या आत्मा मानते है.८
४. बौद्ध लोग क्षणिक विज्ञान को ही आत्मा स्वीकार करते है.९
५. अन्य लोगों के मत से आत्मा शून्य वह माध्यमिक बौद्ध विद्वानो का मत है.१०

❖ मृत्युका रहस्य

कठोपनिषद में ब्रह्मविद्या के अचार्य भगवान वैवस्वत मृत्यु ने तीन दिन तक प्रतीक्षा करनेवाला नचिकेता का स्वागत आतिथ्य करके उसकीसत्य जिज्ञासा देखकर वैवस्वत ने अज,नित्य,शाश्वत,पुराण,अविनाशी,आत्मा-परमात्मा के स्वरूप समजाते हुए कहा कि-

अणोरणीयान्महतो महीया-
नात्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायान्.
तम पश्यति वौतशोको
धातुप्रसादान्महिमानमात्मनः .. ११ (कढ.२-२०)

प्राणीके अन्तः करण में, हृदय में ,बुद्धि में महान् आत्मा निवास करता है. यह सुक्ष्म से सुक्ष्म और महान से महान है. यह सब में व्यापता है इस लिये सुक्ष्म से सुक्ष्म है. सुक्ष्म ही व्यापसकता है. और यह सबको घेरता है इसलिये यहसबसे महान,बडे से भी बडा है. अर्थात् यह सबका एक ही आत्मा है जो सबके अन्दर है और बहार भी है. निष्काम तथा जो शोक रहित होता है वही (तं पश्यति) इसको देखता है और इंद्रियोंकी प्रसन्नतासे वह अपने आत्मा की महिमाको जानता है. निष्कद्गम भावसे सेवा करनेवाला और सदा चिंता न करनेवाला ही इस आत्मा को जान सकता है.

शंकराचार्य कहते है कि इस संसार में छोटी या बडी जो भी वस्तु है वह नित्य सत्स्वरूप आत्मा से हि सत् के रूप से ज्ञात होती है. उस वस्तु को आत्मा से अलग कर दिया जाय तो वह वस्तु असत् के रूप से ज्ञात होगी इसलिए यही आत्मा छोटे-से छोटा तथा बडे-से बडा है. क्योकि जितनी नाम तथा रूपावली वस्तुएँ है वे सब आत्माकी उपाधियाँ है. उपाधियों में जो धर्म भासते है वे सब धर्म उपाधेय में अवश्य भासते है यह नियम है. (स चाऽडयत्माडस्य जन्तो ब्रह्मादिस्तम्बपटयंन्तस्य प्राणि जतस्य) और वह आत्मा ब्रह्मा आदि से लेकर वृक्ष तक के जितने प्राणी है उनके अन्तःकरण में आत्मा के रूप से स्थित है, यह तास्पर्यार्थ है.

यह आत्मा शरीर एक स्थान पर स्थित रहने पर भी बडा दूर तक जाता है. सोता हुआ भी सर्वत्र जाता है,ऐसा यह आत्मा है. शरीर की मर्यादा इस आत्माको मर्यादित कर नहीं सकती.यह दिव्य आत्मा आनन्दमय और निरानन्द ऐसा दोने अवस्थाओ में होता है. इसके कारण जन्म तथा मृत्यु होते है.

भगवद्गीता में भी भगवानने कहा है कि- सर्वभूतस्थितं यो नां भजत्येकत्वमास्थिताः.(भ गीता ६-३१)

- अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः..(भ गीता-१०-२०)
- अहं वैश्वानरों भूत्वा प्राणिनां देह्याश्रितः. (भ गीता १५/१४)

यह सब कह कर भगवान इतना ही दोहरा रहे है कि आत्मा में कदापि कोई परिवर्तन नहीं आता. आत्मा तो नित्य ही अप्रभावित रहता है. जल, अग्नि, वायु, और पृथ्वी के गुण आत्मा में नहीं होते तथा यह महाभूत आत्मा को अपने गुणो से प्रभावित नहीं कर सकते है फिर कहते है, यह आत्मा नित्य है, सर्व व्यापक है. अचल है, स्थिर रहने वाला है, सनातन है.

❖ आत्मा विद्या का महत्वः-

उपनिषदो में जीवात्मा का सम्बन्ध बताने के हेतु कहा तुम शरीर को रथ, जीवात्मा को रथ का मालिक अर्थात् रथ पर बैठने वाला, बुद्वि को रथ वलाने वाला तथा मन को लगाम समझो क्योंकि लगाम के इशारे से घोडे चलते है. वैसे मन से बँधे श्रोत आदि करण मन को ही इशारे से चलाते है.-

आत्मानं रथिनं विद्वि शरीरं श्यमेव तु.
बुद्विं तु सारथि विद्वि मनः प्रगहमेव च.. (कठ-१-३-३)

आत्मा और उसका मन और शरीर के सम्बन्ध का वर्णन करते हुए कठोपनिषद एक रथ और उसके सारथी का उदाहरण देता है. की एक नियत्रिंत रथ अपने स्वामी को उसके लक्ष्य तक पहुँचा देता है और साथ ही सफर को भी आनन्ददायी बनाता है. जबकि दूसरी तरफ एक अनियंत्रित रथ के यात्री को उसके दुःखो का सामना करना पडता है.मन बुद्वि इंद्वियों और शरीर से युक्त इस रथ का स्वामी है.-आत्मा. एस उपनिषद में एक अनुपम तरीके से, आत्मा को आत्मा (आत्मानुभूति) तक की यात्रा का वर्णन किया गया है.

आत्मानं रथिनं विद्वि शरीरं रथमेव तु.
बुद्विं तु सारथिं विद्वि मनः प्रग्रहमेव च..
इन्द्वियाणि ह्याना हुर्विषयांस्तेषु गोचरान्.
आत्मेन्द्वियमनोयुक्तं भोक्तेन्याहुर्मनीषिणः..

भगवद्गीतामें - मम एव अंशः जीवलोके जीव भूतः.[१२] जीवको परमात्मा अंश कहा है और यहां छायारूप कहा है. प्रकाश स्वरूप परमारमा से बननेका भाव यहाँ है. तो अन्यत्र जीवात्मा को अग्निकी चिनगारियाँ कहा है. इस सबका तात्पर्य यह है कि जीव अल्प है. परमात्मा महान है. पर दोनों समान गुण धर्मवाले है. ये दोनों परम उच्च स्थानमें रहते है और मनुष्योंकी (बृहां प्रविष्टों) बृद्वि में प्रविष्ट होकर रहते है.

ऋग्वेदमें कहा है कि -
द्वा सुपर्णा सयुजा सरवाय समानं

वृक्षं परिषश्व जाते.

तपोश्न्यः पिप्पलं स्वादत्यनश्वन्नयो अभि चाकिशीति..(ऋ.१/१६४/४६)

दो सुंदर पक्षी परस्पर मित्र है और वे एक वृक्षपर बैठे है,उनमें एक वृक्षका मीठा फल खाताहै और दुसरा प्रकाशता रहता है. यहाँ दोनों फल खाते है ऐसान हीं कहा. परमात्मा फल भोक्ता नहीं है.ऐसा होते हुए भी इस उपनिषद वचन में दोनोको रसपान करनेवाले कहा है.इसका अर्थ है कि परमात्मा स्वयं आनन्द स्वरूप है और जीवात्मा ब्रह्मी अवस्थामें आनन्द स्वरूप होता है.

सूक्ष्म आत्मा के अंदर्भ में श्वेताश्वतर उपनिषद बताता है कि 'यस्मान्नणीयो न ज्यज्यादौडरिम कश्चित '. विश्व में वृक्ष जैसा स्तब्ध जिससे कुछभी ने तो छोटा है न बडा ऐसे पुरूष से ही सफल व्यास है.१३ कैवल्योपनिषद भी हिरण्यपुरूष के ऐसे ही स्वरूप से समग्र विश्व व्याप्त है.-

अणोरणीयानहमेव् तद्वन्महानहं विश्वमिदं विचित्रम्.१४

पुरातनोशहं पुराणोडह्मीशो हिरण्मयोडहं शिवरूपमस्मि..

छान्दोग्य उपनिषद में उद्दालक आरूनि ने उनके पुत्र श्वेतकेतु को द्धि में सर्पि-धी वृक्ष में रस अश्वत्द वृक्ष के फल में सुक्ष्मातिसूक्ष्म बीज और पानी में लवण के उदाहरणों से परमात्मा के सुक्ष्मातिसूक्ष्म स्वरूप का ख्याल दिया है.

' स य एषोडणिमैतदात्म्यमिदं सर्वतो तत्सत्यं स आत्मा तत्त्वम्सि् श्वेतकेतो.' उपदेश दिया है. इस आत्मा से देह की सभी इन्द्रिय सक्रिय होने के विचार ऐतोरेयोषनिषद और केनोपनिषद में स्पष्ट रूप में बताया गया है. केनोपनिषद में उमा हेमावती आख्यान में तृण को जलाने या उढाने में असमर्थ अग्नि, वायु और इन्द्र द्वारा ब्रह्माण्ड की सभी क्रियाओं के पीछे इस विभु का ही सामर्थ्य बताया गया है. कठोपनिषद् में अग्नि या वायु आधार भेद से परमात्मा संसार रूप में अनेक रूप धारण करते है. (१/९/३०,३/११) इस से ही सब कुछ प्रकाशित होता है. "तस्य भासा सर्वमिदं विभाति" (२/१५)

ईशोषनिषद् के प्रथम मन्त्र में बताया गया है कि- ' ईशा वास्यमिदं सर्व यात्किश्च जगत्यां जगत्.' इस से ही सब कुछ व्याप्त है. तो गर्भोविनिषद् में बताया गया है कि शुक्रशोणितं का संयोग से बुदबुद् नारी के उदर में पलता है. यह आत्मा का सुक्ष्मातिसूक्ष्म स्वरूप क्रमशः सहस्त्रार, हृदय और नाभि को केन्द्र बनाकर सुविकसित शिशु के रूप में जन्म पाकर षड्विकार की अनुभूति करता है.देह में त्रिसप्त स्वरूप धारण करता है. १५ (अथर्ववेद-३/३/१)

छत में जाल से द्वय सूर्यकिरण में जो सुक्ष्म रज पाई जाती है वह सरेणु है. दो परमाणु मिलकर द्वयणूक और तीन द्वयणूक मिलकर त्र्यसरेणु बनता है. परमाणु पंच महाभूत का सूक्ष्मातिसूक्ष्म स्वरूप है, जो विभाजित नहीं होता. ऊन से ही विश्व का स्वरूप बना है. ऐसा कणाद के वैशेषिक दर्शन में पाया जाता है. सूक्ष्म रूप में ब्रह्मणों में प्रविष्ट विभु हिरण्य गर्भ बने.पुरूषसुकत परमात्मा और गीता के विश्वरूप दर्शन (अ-११) में यह दर्शन पाया जाता है. वह भी सहस्त्रशीर्षा परमात्मा विश्वतश्वक्षु होते है. ब्रह्माण्ड के चौदह लोक इ सका परिणाम है. अंततो गत्वा सूक्ष्म स्वरूप भी वही परमात्मा है. ब्रह्माण्ड प्रकृत्पण्ड में विलिन होते है. प्रकृति अण्ड नियीत,काल,राग,विद्या और कला प्रश्चकश्चक मायाण्ड में मायाण्य विद्यातत्व की समष्टि रूप शालाण्डमें समाविष्ट होने का वर्णन पुराणों में पाया जाता है. परम तत्त्व नो शुद्धविद्या, ईश्वर -और सदाशिव तत्त्वों की समष्टि है.उसे में सब कुछ सूत्रे मनदणा इच पाया जाता है, जो मकडी के जाल की तरह सग्रथित है.

❖ जीव और परमात्मा का संबंधः-

कठोपनिषद में आत्मा का दो स्वरूप बतलाते है. जीवात्मा और परमात्मा जीवात्मा नित्य चेतन ज्ञान स्वरूप,अनित्य विनाशी,जड शरीर है.यह जीवात्मा को भोगो से कोई संबंध नहीं है.जीवात्मा अन्नत है.वो कोइ कार्य और कारण भी नहीं है. इस लिए जन्म-मरण रहित एकरस और निर्विकार है.१६ गीता में भी यह श्लोक थोडे से शब्दों के हेर-फेर से आया है,ीक यह आत्मा न जन्म लेता है न मरता है,आत्मा का कभी नाश नहीं होता,आत्मा जब अमर है तो उसे कौम मार सकता है.१७

अथर्ववेद कांड-२ सूक्त-११ में आत्मा का स्वभावधर्म दिखाया है कि आत्मा दोषों के दुर करनेवाले है. वोही शास्त्रों में महान शास्त्र और अस्त्रों में महान अस्त्र है.१८ कठोपनिषद में कहा – समस्त जीवों के हृदयरूपी आकाश में जीवात्मा तथा परमात्मा का निवास है. जीव यहाँ बैढे-बैढे समस्त अपने द्वारा किए कर्मो के फलों को भोगता रहता है. किन्तु परमात्मा साक्षीरूप से स्थित रहता है.जीव तथा परमात्मा के सम्बन्ध को छाया की तरह है. क्योंकि वह तमः प्रधान अज्ञान से आवृत है. किन्तु परमात्मा सत्वप्रधान माया से आवृत चैतन्यरूप होने से धूप के समान है.१९ जीवात्मा और परमात्मा दोनों साथमें ही सत्य का पान करते है. और कर्मफल भोगते है. किन्तु दोनों के भोग में अंतर है. परमात्मा असंग और अभोक्ता है.जीवात्मा फल को भोगते समय असंग रहते नहीं.जीवाटमा अभिमानवश सुख का उपभोग करते है.

उपनिषदों में और गीतामें आत्मा,ब्रह्म,परमात्मा या भगवान के परायण हुआ योगी अपने सहज जीवन में अपने आपको भूलता हुआ तनत्व भावसे उठ जाता है और परमात्मा में स्थित हुआ परम निर्वाण रूपा शान्ति को पाता है ऐसा समझायाहै.

मांडूक्य उपनिषद वैश्वानर,तैजस्,प्राज्ञ और तुरीय अवस्थाओ के रूप में आत्मा का वर्णन करते है. वहाँ आत्मा को चतुष्याद के रूप में समझाते हुऐ कहां कि ओमकार की तीन मात्राऐ जेसै की अ,उ,म् वैश्वानर,तैजस और पाज्ञरूप आत्मा की तीन अवस्थाऐ कहा है.चतुर्य अवस्था मात्रारहित और माप रहित है. इस तरह इस उपनिषदमें ॐ कार को हि आत्मा कहा है.ऐसे विभु व्यापक, नित्य,महतोमहीयान,परमात्मा सदाशिव के साथ ऋग्वेद के ऋषि वानदेव मनुरहभवम् आदि बोलते है तो अम्भृण ऋषि की पूत्री वाक् परमतत्त्व में तादात्म्य की अनुभूति करती बोलती है-अहं रूदभिः वसुभिश्चसपि इत्यादि व्यक्ति ऐसी अनुभूति के लिए उपासना कर सकता है.

परमात्मा की प्राप्ति या पुष्टि भी अनीवार्य है.साधक मानवीय संहार से कुण्डलिनी शक्ति का उत्थान पाकर सहस्त्रार चक्र में सदाशिव से कैवल्य की अनुभूति करने से वामन से विराट्-नित्यक्रम बन सकता है. व्यष्टि-समष्टि में विलीन होता है. इसलिए ऋषि गुरू अन्तेवासी शिष्य को कहता है-

ॐ सहनाववतु.सह नौ भुनक्तु.सह वीर्य करवावहै.
तेजस्विनावधीमस्तु.मा विद्विषावहै.
ॐ शान्तिः. शान्तिः. शान्तिः.

इसी प्रकार उपनिषदो में आत्मा,ब्रह्म का रहस्यपूर्ण तत्वका वर्णन किया गया है. उपनिषदो में ब्रह्म शब्द का अर्थ महान किया है क्योकि ब्रह्म से बढकर महान कौन होगा? कहा भी है "भूमा वै सुखम्". क्योकि प्रत्येक आत्मा अव्यक्त ब्रह्म है. ब्राह्म एवं अन्तः प्रकृति को वशीभूत करते आत्मा के इस ब्रह्मभाव व्यक्त करना ही जीवन का चरम लक्ष्य है. इस तरह प्रत्येक आत्मा अव्यक्त ब्रह्म है. वो ही उपनिषदो में विभिन्नरूप से समजाया गया है. जैसे कि-

अमर्त्य **अमूर्त**	**द्यूलेक**	**आत्मा** **बुद्धि** **मन**	**स्वर्ग स्वः अमरभाग**

अन्तरिक्षलोक प्राण अन्तरिक्ष भुवः (स्वर्ग का भूलोक से संबंध)

मर्त्य **मूर्त**	**भूलोक**	**इन्द्रिय** **शरीर**	**मृत्युलोक,भूःमर्त्यभाग**

भगवान श्रीकृष्णने भी आत्मा का सूक्ष्मतम और अज-अमर वर्णन किया है और जीवात्मा का शरीर को पींड और परमात्मा का शरीर को ब्रह्मांड कहा है.इसलिए जीवात्मा परमात्मा अंशाशी संबंध से जुडे हुऐ है. दोनोकी समानता दिखाते हुऐ कहा-

जीवात्मा	-	परमात्मा
पूत्र	-	पिता
पिंडदेही	-	ब्रह्मांडदेही
देह(अंश)	-	ब्रह्मांड (अंशी)
मन	-	विद्युत
पांच इन्द्रिया	-	पंचमहाभूत
नासिका	-	पृथ्वी
जीभा	-	पाणी
नेत्र	-	तेज
त्वचा	-	वायु
कर्ण	-	आकाश

इस तरह जीवात्मा और परमात्मा दोनो पिता की तरह है. पिता का वर्णन करते पुत्रका वर्णन स्वयं होजाता है,क्यों कि पुत्र ही पिता के समान है वैसे हि आत्मा, जीवात्मा और परमात्मा एक समान ही है. भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि में हि सर्व में, आत्मा स्वरूप रहता है.

रूपं,रूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय.
इन्दो मायाभिः प्रतिरूप ईयते.
(ऋ.६ १४७/१८ बृ.उप.२/५/१९)

इस तरह आत्मा को समझना और आत्मा के विषय में कहना भी कठिन ही नही, असम्भव है.किन्तु उपनिषदो में और भगवद्गीतामें आत्मा की अरण्डता, सुक्ष्मता,महानता समझाई गई है. मानो आत्मा का प्राकट्य ही समझाया गया है.

पादटीप

१ द्रष्टव्य-संस्कृत साहित्य का इतिहास-श्रीगैरोलापृ-१३९

२ द्रष्टव्य-संस्कृत साहित्य का इतिहास-श्रीगैरोलापृ-१४०

३ भूमंडल, चंद्रमंडल, सूर्यमंडल परमेष्ठीमंडल और स्वयंभूमंडल ये पंच पुंडरी है.-उपनिषद मंजरी-पृ-८

४ श्रवणायादि------कृशलानुशिष्टः. कढ-१/२/७

५ मयाततमिदं------चेज्वस्थितः -भगवद्गीता अ-९/४

६ देहमात्र चैतन्यविशिष्टात्मा इति प्रष्युत्ता जनाः.

७ इन्द्र ज्येत चैतन्यात्मत्पत्परे.

८ मन इत्यन्ये.उपनिषदो का तत्त्वज्ञानं-पृ-१४८
भारतीय विद्या प्रकाशन दिल्ली,वारणसी,

९ विज्ञान मात्र अणिकपमात्यपरे.

१० शून्य मित्यापरे.छा.४/९/१२

११ कढ.२-२० कृष्णदास अकादमी,वारणसी.

१२ भगवद्गीता-१५

१३ श्वेताश्वतर-३/३२

१४ कैवल्योपनिषद-२३

१५ अथर्ववेद (३-३-१)

१६ न जायते म्रियते वा----हन्माने शरीरे-कढः१/२/४

१७ न जायते म्रियते वा----हन्माने शरीरे-कढः२/२०

१८ पुष्प्या दुषिरसि हेन्या---समक्राम.-अथर्ववेद कांड-२ सूक्त-११-१ ब्रह्म विद्या प्रकारण

१९ छाया तपोब्रह्मविदो वदन्ति-त्रिणाचिकेता-कढो-१/३/१

Green Flag Foundation , Sonasan

Sabarkantha, Gujarat - 383210,IND.
Web: www.eternityzxy.com , emai : patelrjsh4@gmail.com,
Contect no : +91 9724590815,

Eternity Literature & Social Science Review Journal | Eternity Literature & Social Science Review Journal | Eternity Literature & Social Science Review Journal

ELSSRJ
e-Journal For Scholar

Eternity Literature & Social Science Review Journal

ISSN 2456–3528

Certificate of Article

This is to certify that our Editorial board and Peer review team accepted the Article Under title Upanishadome Atma ka Svarup. Which is submitted by Prof. Jayaben C. Parmar . This Research Article is original and innovative. It is double blind peer re-viewed. This paper is published in Volume –II, Issue- II (April-2017 Issue).

CHIEF EDITOR
Eternity Literature &
Social Science Review Journal